'परखे हुए लोग' काव्यकृति : सामाजिक संदर्भ

मुरली मनोहर भट्ट*

सारांश

डॉ0 शेरसिंह बिष्ट की हिन्दी काव्यकृति 'परखे हुए लोग' हिन्दी साहित्य लेखन परंपरा की एक महत्वपूर्ण कृति है, इस कृति में चित्रित सामाजिक सन्दर्भों जैसे– सामाजिक वैशम्य, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, शोषण, आदर्श एवं नैतिकता के पतन तथा सामाजिक चेतना आदि के विष्लेषण पर केन्द्रित है।

मुख्य शब्द– परखे हुए लोग, समाज, सामाजिक चेतना, शोषण, पीड़ा आदि।

साहित्य लेखन मन और मस्तिष्क की गहन अभिव्यक्ति है, जिसके माध्यम से लेखक अपने विचारों व भावों को प्रकट करता है। उत्तराखण्ड भारत की उत्तरी छोर पर स्थित है। इसकी भौगोलिक संरचना विषम है, जिसके एक ओर गगनचुम्बी पर्वत श्रेणियाँ है तो दक्षिणी भू–भाग तराई और मैदानी क्षेत्रों के अंतर्गत आता है। यहाँ के अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी की विभिन्न विधाओं में रचना करके हिन्दी साहित्य को समृद्धि प्रदान की है। इन साहित्यकारों में सुमित्रानंदन पन्त, इलाचन्द्र जोशी, वीरेन्द्र डंगवाल, शैलेश मटियानी, मनोहर श्याम जोशी, शेखर जोशी, मंगलेश डबराल, हिमांशु जोशी, लीलाधर जगूड़ी, विद्यासागर नौटियाल, शिवानी, मृणाल पाण्डेय व लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' आदि प्रमुख हैं।

उत्तराखण्ड की इस पावन भूमि में इन महान रचनाकारों ने जन्म लेकर अपनी विलक्षण प्रतिभा क्षमता द्वारा हिन्दी साहित्य सेवा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इसी साहित्य धारा को समृद्धि प्रदान करने में लगे हुए सम्मानित हस्ताक्षरों में डॉ0 शेरसिंह बिष्ट भी हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एवं बहुमुखी प्रतिभा संपन्न डॉ0 बिष्ट ने सृजनात्मक साहित्य एवं आलोचनात्मक कई मौलिक ग्रन्थों की रचना कर हिन्दी एवं कुमाउनी साहित्य को अभिवृद्धि प्रदान की है।

इसी क्रम में इनकी एक महत्वपूर्ण हिन्दी काव्य रचना 'परखे हुए लोग' हैं, जिसका प्रकाशन 2001 में हुआ। इस काव्यकृति में 176 कविताएं संग्रहीत हैं। यह कविता संग्रह एक प्रकार से डॉ0 बिष्ट के जीवन का दर्पण है, जिसके माध्यम से समकालीन दौर की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, दार्शनिक, आर्थिक, मानवतावादी एवं राष्ट्रीय पक्षों की यथार्थ, मौलिक एवं सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। समकालीन दौर के उन सभी सामाजिक संदर्भों जैसे– सामाजिक वैशम्य, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, शोषण तथा आदर्श एवं नैतिकता के पतन को बड़ी निर्भीकता के साथ सामने लाया है और सत्य का उद्घाटन ईमानदारी पूर्वक किया है।

मनुष्य का जन्म विकास और निर्वाह समाज में होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। साहित्य में युगीन परिस्थितियाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। कवि समाज में व्याप्त वास्तविकताओं, विकृतियों, विद्रूपताओं और वैशम्य को उद्घाटित करता है। वह उनकी अनदेखी नहीं कर सकता है। डॉ0 बिष्ट ने वास्तविकताओं पर पर्दा डालने वालों को इस रूप में आइना दिखाया है–

''कर्म पथ के
धर्म–पथ से
विचलित उसे
न करो
अभिव्यक्ति कभी
दब नहीं सकती
होंठ सीने से
कट पड़ती है
ज्वालामुखी–सी
समय के गर्भ से!''[1]

डॉ0 बिष्ट की कविताएँ समाज को आइना दिखाती हुई प्रतीत होती हैं अर्थात् समाज का वास्तविक रूप सामने लाती हैं। समाज जैसा है, जिस रूप में है कवि उसी रूप में उसे चित्रित करता है। कवि की यह भावना 'विनती' कविता में देखने को मिलती है–

* शोधछात्र, हिन्दी विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

''कलियुगी देव जिसने भजे
कर्महीन सब वे तर गये
काया बुझी अश्रु नहाते
करूणानिधान, तुम न पसीजे!
प्रभु! यदि धरा में हो कहीं
सुन लेना विनती इतनी ही
कर्म–योग हो जिसके हाथ
फल–योग भी हो उसी के साथ।''[2]

इन पंक्तियों में यथार्थ का जितना तीखा दंश है, भगवान से न्याय पाने की उतनी ही तीव्र अभिलाषा भी, कवि को कर्महीनों का तर जाना और कर्मयोगियों का भटके रहना स्वीकार्य नहीं है। कवि की भावना है कि व्यक्ति को कर्म के अनुसार ही फल भी मिलना चाहिए।

समाज में अनीति–अन्याय, ऊँच–नीच, अधर्म–शोषण जैसी प्रवृतियाँ व्याप्त रही हैं जिनसे मनुष्यता की पहचान धूमिल हो चुकी है। कवि के मन में अनेक क्रांतिकारी प्रश्न हिलोरी ले रहे हैं, जो अनीति और अन्याय को सहन करने की स्थिति से रोक रहे हैं और अन्यायी को ललकार रहे हैं। कवि की इन पंक्तियों में उसका यह स्वभाव देखा जा सकता है–

''मेरे शुद्र जिस्म के
लहू का
कतरा–कतरा
जो तुमने युगों से
पिया है
उसके सुप्त घावों में
आश के फफोले
उग आए हैं!
छाय समझकर
जो तुमने जिया है
व्याज सहित
लौटा दो
कसमसाते ये फफोले
अंगारों में
फूट पड़ेंगे
पी जायेंगे
समिधा बनकर।''[3]

यहाँ कवि दबे–कुचले और दीन–हीन लोगों को समानता की भूमि में लाकर उन्हें उनके अधिकार दे दिये जाने का पक्षधर है। अगर समय रहते उनके अधिकार उन्हें नहीं दिये गये तो फफोलों में दधकती आग की ज्वाला उनको भस्म कर देगी। जिन्होंने इन लोगों को आज तक अधिकारों से वंचित रखा है।

आज समाज में मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु हो गया है। चारों तरफ मार–काट, लूट–खसोट व हत्याओं का भयावह तांडव चल रहा है तथा मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं व आपसी संबंधों का पतन हो रहा है। कवि ने समाज की उस विद्रूपता और भयावहता का यथार्थपरक चित्रण किया है–

''देखकर भयावह
पंजों के निशान
कटते इंसान
जलते मकान
लुड़कते धड़

नोचते कौवे
जिस्म सुंदर
खूनी होली
बुझी दिवाली
खामोश ईद
उजड़ी प्रीत!''[4]

डॉ0 बिष्ट समाज में व्याप्त जाति, वर्ण, छूत–अछूत, ऊँच–नीच, रूढ़ि–अंधविश्वासों जैसे पाखण्डों की कटु आलोचना करते हैं और इन पाखण्डों को उद्घाटित करने में कवि जितना सक्षम है, उतनी सामर्थ्य अन्य किसी में नहीं। कवि धर्म के उन ठेकेदारों को चेतावनी देते हुए कहता है कि यह गोरखधंधा और पाखंड बंद करो क्योंकि ये सब मनुष्य को अवनति की ओर ले जाते हैं। तथाकथित सनातन धर्म या कर्मकाण्ड से जितनी दुकानें चलती हैं वे यथास्थितिवादी लोग समाज को पीछे धकेलना चाहते हैं। इन तथाकथित देवताओं को आग्रह करते हुए कवि कह उठता है–

''देवताओ! सावधान, भेद सारा अब खुल गया है
पाखण्ड की बूढ़ी जड़ों में दीमक भी लग गया है
हल जोतेंगे कृषक स्वर्ग में, देव–देवियों के संग
गले मिलेंगे मनुज धरा पर, नई सुबह के संग!''[5]

सामाजिक रिश्तों के परिवर्तन होने से समाज की नींव खोखली होती जा रही है। व्यक्ति अपनी कुनीतियों, कुविचारों एवं कुकृत्यों को त्याग नहीं पा रहा है। ऐसे दूषित विचारों वाले व्यक्तियों की प्रवृत्ति साँप–बिच्छू के समान होती है। कवि लोगों के विश्वासघात एवं धोखाधड़ी से चिंतित है और इस अविश्वासमय परिदृश्य को देखकर भावुक हृदय से व्यथित हो उठता है–

''साँप को खूब दूध पिलाओ
निज धर्म वह नहीं छोड़ेगा
बिच्छू को कितना सहलाओ
दंश–दान कभी न भूलेगा!
जीवन के बदलते रिश्तों का
क्या यही एक अनुक्रम होगा
रिश्तों की अस्थिर बस्ती में
विश्वास ही क्या धोखा होगा!''[6]

कवि समाज को जागरूक करना चाहता है और कवि ने समाज की छोटी–बड़ी समस्याओं को अपनी रचना के माध्यम से उजागर किया है। 'भ्रूर्ण हत्या' और 'एड्स' वर्तमान समाज की गंभीर समस्या है। डॉ0 बिष्ट ने अपनी इन कविताओं के माध्यम से इन्हीं समस्याओं को उजागर किया है–

''यौन शिक्षा सबको देनी है
जिम्मेदारी नई निभानी है
हो सुरक्षित यौन सम्बन्ध
मुक्त हों नर–नारी बंधन!''[7]

इसी प्रकार 'भ्रूण हत्या' कविता एक माँ की हृदय की पीड़ा को व्यक्त करती है, जो अपने गर्भ में शिशु को मरवाना नहीं चाहती। डॉ0 बिष्ट की यह कविता वर्तमान समय में हो रही भ्रूण हत्याओं को रोकने के लिए समाज के लिए एक संदेश है–

''मेरे उजले
अस्तित्व के
खाद–पानी से
मुस्करा लेना,
भ्रूण हत्या

न करना
क्या पता
उसी में
ईस का
दूत कोई
छिपा हो
कोख माँ की
खोज रहा हो!''[8]

कवि का दृष्टिकोण आशावादी है। डॉ0 बिष्ट ने अपने काव्य संग्रह 'परखे हुए लोग' में जहाँ एक ओर सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है वहीं उन समस्याओं का समाधान खोजते हुए इन्होंने आशावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। नवीन चेतना से परिपूर्ण कवि प्राचीन अप्रासंगिक परंपराओं को त्यागकर एक नए युग को अपनाना चाहता है। कवि की इस दृष्टि की पंक्तियां प्रस्तुत हैं–

''चलो चले
कहीं दूर
किसी गुरू वशिष्ठ
या वाल्मीकि शरण में
एक नये अभिमन्यु को
जन्म देने
द्वार सातों
ध्वस्त करने!''[9]

आधुनिकता के इस दौर में सामाजिक परिवेश तो प्रभावित हुआ ही है, आपसी संबंधों में गिरावट आई है। मनुष्य का नैतिक व आत्मिक पतन हो रहा है। देह, प्राण व आत्मा भी बिक रही है। प्रेम रूपी आन्तरिक तत्व है ही नहीं। मात्र देह रूपी दिखावा प्रेम ही आज के समाज में व्याप्त है। वर्तमान प्रेम संबंधों की झलक डॉ0 बिष्ट की 'प्यार की प्यास' कविता में देखने को मिलती है–

''प्यार अब
देह–धर्म है,
अंतर्मुखी नहीं
वह बहिर्मुखी है;
द्विजिह्वा सा
विशमुखी है
नुमाइश में
सजता है
राह चलते
बिकता है!''[10]

समकालीन दौर का कविता संग्रह 'परखे हुए लोग' सामाजिक संबंधों, नैतिक–मूल्यों, भ्रष्टाचार–शोषण, अंधविश्वास–रूढ़ियों व आडम्बरों को उजागर करता हुआ काव्य संग्रह है। अधिकतर कविताएं इन्हीं विशिष्टताओं को चित्रित करती हैं। कवि स्वार्थपूर्ण रिश्तों से पीड़ा का अनुभव करता है क्योंकि आज के समाज में संदेह और अंधविश्वास की भावना ने रिश्तों की डोर को कमजोर किया है। कवि निस्वार्थ और उदात्त प्रेम की भावना को प्रकट करता हुआ लिखता है–

''रिश्ते–नातों पर से भी विश्वास क्यों उठ रहा है?
लाभ हानि की नींव पर, महल उनका बन रहा है!
रिश्ता लहू का भी, रंग क्यों यूँ बदलने लगा?
लहू दूसरों का, उस पर जो अब चढ़ने लगा!''[11]

प्रेम और विश्वास के बिना जीवन संभव नहीं है। ये दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। किसी एक के अभाव में भी खुशहाल जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है–

''प्यार और विश्वास
सिक्के के दो पहलू हैं
हृदय के आइने में
देह–प्राण में बसते हैं!''[12]

डॉ0 बिष्ट की कविता 'पशु बन जाएँ' आधुनिक समाज की सभ्यता पर व्यंग्य है। सचमुच हमने पशु से मनुष्य बनने की जो यात्रा की है उसमें सारी भौतिक उपलब्धियों के बाद भी हम जीवन की सहजता को यहाँ तक खोज चुके हैं कि कभी–कभी यह सोचने का मन करता है कि हम पशु ही बन जाएं तो कम से कम उन समस्याओं से तो हमें निजात मिले जो मनुष्य होने के अहंकार में हमने पैदा की हैं। डॉ0 बिष्ट की यह कविता इसी भाव को सृजनात्मक विस्तार देती है–

''निर्मल निच्छल मन
न भोग लिप्सु तन
नग्नता, में ही मग्न
न प्रकृति नियम भग्न
न शासन का कुशासन
न भूषण का प्रदूषण
न विकास का विनाश
न कंकरीटों के जंगल
न मानव–अमंगल,
न बम–अणु बम
भोले बाबा बम–बम!''[13]

कवि समाज में व्याप्त ऊँच–नीच की भेदपूर्ण परम्परा का विरोधी है। उसका मानना है कि एक ही बीज, रक्त, मिट्टी व एक ही गर्भ से मनुष्य उत्पन्न हुआ है। जिस प्रकार अनेक स्रोतों का जल एक जैसा ही है उसी प्रकार सभी मनुष्य समान हैं–

''एक बीज, एक रक्त
एक माटी, एक गर्भ
स्रोत अनेक, जन एक
कर्म अनेक, देह एक!''[14]

'गीता की शपथ', 'भेद कैसा', 'पत्थर के देवता' व 'सपने' आदि कविताओं में कवि ने जहाँ एक ओर अति रूढ़िवादिता का घोर विरोध किया है, वहीं परंपरा के प्रति आग्रह भी व्यक्त किया है। इसलिए कवि ने अदालत में खड़े गवाह के द्वारा ली गई 'गीता की कसम' की विडंबनाओं को रोचक ढंग से वाणी दी है–

''मैं
गीता की शपथ लेता हूँ
विपक्षी वकील साहब
शक करते हैं
फिर भी,
मुझ पर ही नहीं
गीता पर भी!''[15]

अपने जीवन के अनेक पड़ाओं को पार कर मनुष्य अन्ततः वृद्धावस्था की दहलीज पर कदम रखता है। विभिन्न अवस्थाओं में जिस शरीर को देखकर मनुष्य उत्साह, उमंग और प्रसन्नता में रहता है, वही शरीर वृद्धावस्था में उसके लिए बोझिल बन जाता है। डॉ0 बिष्ट की निम्न पंक्तियों में इसी कटु सत्य की अभिव्यक्ति हुई है–

''घुटनों के बल चले थे कभी
घुटनों पर ही क्यों बोझ बने,
अश्ववत् थे सरपट भागते
वैशाखी लेकर यह कहाँ चले!''[16]

परिस्थितियां अनुकूल न होने पर भी मनुष्य वृद्धावस्था में पराजय नहीं मानता। उसकी जिजीविशा और दृढ़ शक्ति अन्तिम दहलीज पर खड़ा होने पर भी उसे हार न मानने के लिए प्रेरित करती है। डॉ0 बिष्ट की इन पंक्तियों में यही भाव प्रकट हुआ है–

''नहीं ऐसा मैं, कभी नहीं करूंगा
उम्र अपनी पूरी जिऊँगा
लड़ता रहुँगा, अंधेरों से
तनिक न डरूँगा बुढ़ापे से!''[17]

कवि ने समाज के कृषक, शोषित, पीड़ित एवं निर्धन– उपेक्षित वर्ग के जीवन को निकट से देखा और इसी वर्ग की पीड़ा को अपनी रचनाओं का विषय बनाया जो इनकी रचना में अनेक स्थानों में जीवंत हो उठा है। 'बेचैनी क्यों' कविता की निम्न पंक्तियों में एक निर्धन किसान की दयनीय दशा का सजीव एवं मार्मिक चित्रण हुआ है–

''जुते बैल की तरह
खींचते घसीटते
जीवन की गाड़ी
जेठ की दुपहरी में
लहुलुहान हो गई
पूस की सर्द रातें
ऊँघते–ऊँघते
पाँव तलक
बर्फ की–सी
चट्टान हो गई!''[18]

कवि का जीवन समाज से जुड़ा रहता है इसलिए वह युगीन सामाजिक चेतना को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाता है। कवि का युग विशेष के सत्यों एवं तथ्यों से किसी न किसी प्रकार विशेष संबंध रहता है। उसी समसामयिक यथार्थ को कवि ने अपनी रचना में प्रमाणिकता के साथ व्यक्त किया है–

''देख भले मानुष को भी लोग क्यों डरने लगे हैं?
इंसानों की खाल में, भेड़िए जो अब घूम रहे हैं!''[19]

समाज में व्याप्त स्वार्थपरकता, भ्रष्टाचार व स्वहित आदि विकृतियों ने मानव मूल्यों का निरंतर ह्रास किया है, जिस कारण मनुष्य के ह्रदय से राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना विलुप्त होती जा रही है। समाज के रक्षक भी आज भक्षक बन गये हैं। देश का गौरवशाली अतीत कलंकित हो रहा है। यह भाव डॉ0 बिष्ट की इन पंक्तियों में द्रश्ट्व्य है–

''राष्ट्र–भक्ति भाव भी, क्यों नहीं आज दिलों में
डूब रहा है हर इंसान, भ्रष्टाचार के दलदल में!
देशहित बलिदान की, भावना क्यों सिमट रही
समष्टि–हित की कामना, व्यष्टि–हित में सिकुड़ गयी!''[20]

भारत का समाज अनेक जाति, धर्म, संप्रदायों को मानने वाला है परन्तु कवि का संसार जाति, धर्म व संप्रदाय से परे होता है। कवि हमेशा कल्पना करता है कि समाज में मनुष्यता सर्वोपरि हो। भारत की पहचान भारतीयता स्वीकारते हुए कवि कहता है–

''मुझे जाति–धर्म संप्रदाय नहीं
भारत भूमि के इंसान चाहिए

मैं भारत हूँ, विश्व सिरमौर
भारतीयता की पहचान चाहिए!''[21]

'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना भारतीय संस्कृति के मूल में है। भारतीय समाज में सभी धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों को समभाव दृष्टि से देखा जाता है। 'हमें जीना है' कविता की ये पंक्तियाँ इसी भाव का चित्रण हैं–

''नहीं एक धर्म, एक जाति
भारत सर्वधर्म समभाव का
'वसुधैव कुटुम्बकम' का नारा
गगन में जिसके सदा गूँजता!''[22]

इस काव्य संग्रह की प्रत्येक कविता में उदात्त संवेदना, सामाजिक चेतना, सामाजिक सरोकारों व मानवीय मूल्यों का निरूपण हुआ है। यह इस संग्रह की कविताओं की विशिष्टता है। समाज में व्याप्त कुरीतियों, विकारों एवं विद्रूपताओं को समाप्त कर कर्मपथ पर निरंतर अडिग रहने और आगे बढ़ने की प्रेरणा कवि की प्रस्तुत पंक्तियों में परिलक्षित होती है–

''दूरदर्शी वह, नहीं भाग्यवादी
कर्मयोग निरत है आशावादी
चाहे मुसीबतों का पहाड़ टूटे
कर्म–पथ पर बढ़ता ही जावे!''[23]

डॉ0 बिष्ट की निम्न पंक्तियाँ भी व्यक्ति को कर्म रूपी धर्म अपनाने, न्याय व सत्य का मार्ग अपनाने, अशिक्षा को दूर भगाने की सीख व प्रेरणा प्रदान करती हैं–

''कर्म–पूजा का धर्म अपनाएँ
भूख भीख का रोग मिटाएँ
अशिक्षा का अंधकार भगाएँ
न्याय सत्य की राह अपनाएँ!''[24]

महाभारत में दुर्योधन की सभा में दुःशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण किया गया था। आज भी समाज के घर–घर में, चौराहे और गली मौहल्लों में कई दुःशासन जन्म ले रहे हैं और सैकड़ों द्रौपदियों को बार–बार नग्न कर रहे हैं। बलात्कार और यौन शोषण का शिकार होती हुई ये द्रौपदियाँ (स्त्रियाँ) अपनी विवशता में आंसू बहा रही हैं–

''निर्वस्त्र किया है
दुःशासनों ने
द्रौपदियों को
बार–बार
घर–चौराहे
राज–दरबार!''[25]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ0 शेरसिंह बिष्ट के काव्य संग्रह 'परखे हुए लोग' में सामाजिक संदर्भों की भरमार है। इन्होंने समाज में रहकर समाज के प्रत्येक पक्ष को देखा और अनुभूत किया, जिस कारण इनकी रचनाओं में भी समाज पूरी तरह रचा बसा है। समाज में व्याप्त सुख–दुःख, करूणा–विशाद, आशा–निराशा, प्रेम–सौंदर्य आदि का भावपूर्ण चित्रण अपनी धरती–माटी से जुड़े रहने की भावना, सामाजिक समस्याओं का वर्णन और उनका समाधान प्रस्तुत करने की प्रबल इच्छा, संभाव की दृष्टि व व्यष्टि से समष्टि की ओर भी दृष्टि आदि अनेक विशिष्टताओं ने इस काव्यकृति में चार–चाँद लगा दिये हैं और रचना को विविध रंगों से परिपूर्ण कर दिया है।

इस काव्य संग्रह की कविताओं में समरसता का भाव है। कवि का व्यक्तिक आनन्द, लोकमानस का आनन्द है। व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण के कई चित्र इस कृति में उभरकर सामने आए हैं तथा व्यष्टि और समष्टि का भेद समाप्त हो गया है। परम्परा और आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक उपलब्धियों को परखने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। जैसा कवि स्वयं लिखता है– ''इस संग्रह की कविताओं में भी परम्परा तथा आधुनिकता के सन्दर्भ में समसामयिक युग की विसंगतियों को अनुभूति के धरातल पर समझने एवं परखने की कोशिश की गई है।''[26] इस प्रकार यह काव्य संग्रह

विविध सामाजिक संदर्भों को परखने, समझने में व अध्ययन करने की दृष्टि से पाठकों का मार्ग प्रशस्त करेगा और उन्हें सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने में पूर्णतया सक्षम होगा।

सन्दर्भ सूची

1. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, बिलमपुर भवन, चीनाखान अल्मोड़ा उत्तराखण्ड, 2001 पृ0 08
2. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 01
3. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 42
4. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 33
5. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 51
6. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 117
7. बिष्ट शेरसिंह,, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 222
8. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 93
9. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 22
10. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 108
11. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 49
12. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 70
13. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 153
14. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 43
15. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 19
16. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 46
17. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 46
18. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 231
19. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 48
20. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 48
21. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 208
22. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 211
23. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 132
24. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 212
25. बिष्ट शेरसिंह, परखे हुए लोग, उपरोक्त, पृ0 03
26. डॉ0 शेरसिंह बिष्ट, मेरा रचना संसार पहचान और परख, पृ0 340